

ॐ श्री हरि रायल कृत नित्य लीला ॐ

|                                 |    |
|---------------------------------|----|
| ॐ १. भंगल भोग ॐ                 |    |
| आत समै छिरीं खण्ण जासा,         |    |
| गावति भंगल भीत रसासा.           | १  |
| करि सिंगार भयनिवै धोवै,         |    |
| अपनो अपनो हसो जिलोवै.           | २  |
| भयन करै सोहन-वस गावै,           |    |
| सुभिरि सुभिरि हरि-गुन ससु पावै. | ३  |
| भाजन भित्री हसो मकार,           |    |
| खीयो हृष कपूर भिदार.            | ४  |
| कस्तुक मनोरथ के पकवान,          |    |
| थार खेवति सुंदर जान.            | ५  |
| नथे जसन रूपन हरि सावक,          |    |
| लै लु बही सुंदर सुज हावक.       | ६  |
| अति ही सुरंग जिलोना हीने,       |    |
| विविध मनोरथ मन में डीने.        | ७  |
| डोढे ग्वाल फिरक डो बले,         |    |
| अति आतुर भावन सेां मिले.        | ८  |
| टेर करत सुरभि समुहार,           |    |
| करी पिबरी धोरी आर.              | ९  |
| कामरे पुमरे और भण्डी,           |    |
| सण गुन पूरन समै अनूडी.          | १० |
| खंग नाट करन आण गेठे             |    |

- अपने अपने अछरन भोले. ११  
 सुख नाह मिरकन में सोहे,  
 सवन सुनत सुख को मन भोले. १२  
 भंगल सबह कान कथ पयो,  
 सकल साण कर में तू धयो. १३  
 धरि जिधि धर-धर ते सुख खली,  
 नंद-नंदन को होखन खली. १४  
 सुख सिखा पौदे हरि राय,  
 पार-पारि के कसुभति भाय. १५  
 किरि अके किरि किरि के आवे,  
 कभल-नवन को नांकि कवावे. १६  
 ताकि सुभे आवी अण आला  
 माने, भरत गवह डी खाला. १७  
 नूपुर डी धुनि सुनि नंदराय,  
 यौंकि डोके तण कुंवर कन्धाय. १८  
 निकट गर्थ तहो कसुभति भाय,  
 अहन होयि के लेत अलाय. १९  
 जिधुरी अलक, लटपटी पाय,  
 पीक कपोस, सुख अंगन लाग. २०  
 अंदन डेर पर, जिन गुन भाय,  
 सुवन अंत अंत परम रसाय. २१  
 यह सोसा निरभत अण आला,  
 रस भसे तैत होये नंदलाय. २२

|                             |    |
|-----------------------------|----|
| जसुभति धार्ध उछंगदि' डीने,  |    |
| धूमि जहन डर सीतल डीने.      | २३ |
| भंगल जोग ज्ञानिके राधुधौ,   |    |
| गिरिधरलाल स्वाद सों बाधुधौ. | २४ |
| भाजन भिसरी भात बटावे,       |    |
| धौरी डी पय अति डी कारे.     | २५ |
| दधि डी डी'ट लगी' तन सोभित,  |    |
| माने' उदुगन अ'णर सोभित.     | २६ |
| सपटाने सुभ जसुभति हेजे,     |    |
| अपुने जनम सुकल करि हेजे.    | २७ |
| रखके जसुना जल सों पारै,     |    |
| पोंछि जहन अ'यल सों जेवे.    | २८ |
| पुनि अ'यवाय जवावे धौरी,     |    |
| सकल साज सजि लार्ध अहीरी.    | २९ |
| भंगला डी आरती उतारी.        |    |
| सोभा हेजि रही' जण नारी.     | ३० |

卐 रतान 卐

|                           |    |
|---------------------------|----|
| कनक पाट जेठे मन सोहन,     |    |
| लामि रही जसुभति अति गोहन. | ३१ |
| केछि करि डों तेव लगारै,   |    |
| परसत अंग परम ससु पारै.    | ३२ |
| केछि अंग उजटनी करै,       |    |
| जिअध मनोरथ मन जे धरै.     | ३३ |

|      |                       |    |
|------|-----------------------|----|
| कोवि | जेनी कर मे धरे.       |    |
| ला   | उपर युनि क'गर् करे.   | ३६ |
| कोवि | कनक घट कल के रहे.     |    |
| कोवि | पह - अ'सुध कर गहे.    | ३५ |
| कोवि | हरि के स्नान करावे.   |    |
| अ'म  | असन करि अति असु पावे. | ३६ |

卐 २. सुभार 卐

|        |                        |    |
|--------|------------------------|----|
| कोवि   | तनिया अ'म पलिसावे.     |    |
| कोवि   | सुधन सरस अनावे.        | ३७ |
| कोवि   | आमो पदुका करे.         |    |
| कोवि   | अहु मिधि सुधन धरे.     | ३८ |
| कोवि   | कुलक सुर'ग धरे सीस.    |    |
| पाग    | द'धावे गोकुल हिस.      | ३९ |
| सुभ    | तो हो अ'क राग अ'देते.  |    |
| सज     | हरिकन मे गुनन अ'देते.  | ४० |
| मेर    | अ'दिका गु'ग कर.        |    |
| अ'क    | जन के सुभ मान आधार.    | ४१ |
| कोवि   | नैननि अ'जन अ'क'वावे.   |    |
| कोवि   | भुग मह लिखक अनावे.     | ४२ |
| पे'दोप | आख के क'क धरावे.       |    |
| अ'दित  | सदन की हीर अतावे.      | ४३ |
| रतन    | अदित सुरधी कर हर्ष.    |    |
| मे'कन  | परम प्रीति से अ' हर्ष. | ४४ |

- तज्ज अर्थात् कुपमान - कुभारि,  
 छवि पर वारीं डेटिक भार. ४५  
 छठ करि करि सिंगार कराने,  
 अहु जिधि कूपन जसन जतावे. ४६  
 अर्जन हुम, डेसर डी आद,  
 सज्ज सुवतिन मे' छारिडी छाल. ४७  
 नज्ज सिज्ज जे' सिंगार कराने,  
 हेज्ज गोपाल परम असु पावे. ४८  
 अर्जु मेवा पडवान मिठारि,  
 सुदित वसेभति गोद बरारि. ४९  
 स'सुज्ज आव रडी अज्ज नारी,  
 हर्पन हेअहु कुंज जिहारी । ५०  
 वे तो करिसुज्ज कमल निहारे,  
 करि राधा जिधु जडन निहारे. ५१  
 जानहु अर्जुप कमल रस खाण्णे,  
 हे जने' प्रीति अमृत रस खाण्णे. ५२  
 निरजि निरजि कुडी अज्ज नारी,  
 हरसन हेत हे कुंज जिहारी. ५३  
 सोभा हेज्ज रडी अज्ज नारी,  
 हंसि हंसि हेत पररपर तारी. ५४  
 ५३ उ. गोपी वल्लभ - जोग ५३  
 गोपी वल्लभ जोग हे धर्यो,  
 सो तो जवन जवन प्रति कुर्यो. ५५

|                               |    |
|-------------------------------|----|
| पूरी, हली, संधानो, साके,      |    |
| भाजन, पुरो, जहु जिधि पाके.    | ५६ |
| सुखदिन के मन रंजन करिन,       |    |
| प्रेम सहित बीनो मन भाजन.      | ५७ |
| ज्येन सराय भीरा जण हीनो,      |    |
| जिजिध ज्योति मनोरथ हीनो.      | ५८ |
| मनसा पुरेन नंद कुमार,         |    |
| ठाके के जसुमति के द्वार.      | ५९ |
| मैया भधि भधि घैया ध्यावे,     |    |
| ज्यार ज्यार जेरे ज्यंतर जावे. | ६० |
| जेनी जड़े लाल ! पय पीजे,      |    |
| धंतने कथो हमारो डीजे.         | ६१ |
| घोड़ी डो पय परम रसास,         |    |
| सात वूंट सर पीजे लाल !        | ६२ |
| जहन धाय भीरा जण बीनो,         |    |
| मैया तण ही जिहीना हीनो.       | ६३ |
| ठाड़ी रही रोदिनी रानी,        |    |
| भीडी जाल कही मन मानी.         | ६४ |
| भीर सिरात स्वाह नही जावे,     |    |
| आस डेके लेहु को जावे.         | ६५ |
| ज्यति हित सेा तण जेवन हीनो,   |    |
| भात जसुमति के सुख हीनो.       | ६६ |
| ज्येनत किरत सभा संग हीनो,     |    |

पारिक पार गिरि महर जीने. ६७  
 अति प्रणीन वसुभति डो पूत,  
 सणदिन डों मन लीनो धत. ६८  
 घोड़ी हरि सणदिन सुण हैत,  
 गोपीन डो सरणसु हरि लेत. ६९  
 हरि सकैत सुखार्थ गोपी,  
 डिन तो सण भरजाडा लोपी. ७०  
 सणदिन डो डीयो मन जायो,  
 ता करेन यह अण में जायो. ७१  
 वसुभति सणिवन डों लु सुखारै,  
 कभल नैन डों कहुं न पावै. ७२

ॐ ४. राजभोग ॐ

देयो री सुपाल कडो भोगत,  
 कडो लय वसुभति तोहि भोगत. ७३  
 भोगन डों जेठे न'ह राय,  
 तुम स'न भोगन करेहु जाय. ७४  
 वण भैया डी लनी प्रीत,  
 जाय गये गिरिधर सह भीत. ७५  
 जेठे जाय कनके आसन पर,  
 न'ह राय पकरे कर सों कर. ७६  
 कनके परेन आरी वसुना वल,  
 भारि लार्थ वसुभति अति विभवल. ७७  
 पनधारो जेयो विस्तार,

|                             |    |
|-----------------------------|----|
| ता पर धर्यो कनक के धार.     | ७८ |
| मेला छोटे मोटे धरे,         |    |
| समया रत्न कदित तहो धरे.     | ७९ |
| अजर धूप डीन्डो ता डोर,      |    |
| दित - सौ प्रभुल लीला डोर.   | ८० |
| अति सुगंध व्यापरे के आत,    |    |
| आनि धर्यो है कसुमति मात.    | ८१ |
| हाड़े भूंग अरु हारि अनार्थ, |    |
| ता के संग कही है आर्थ.      | ८२ |
| भिरवान के डीने अहु साक,     |    |
| दित सौ कसुमति डीने पाक.     | ८३ |
| सिअरन और हठी के आत,         |    |
| आयो - भीडे अड़ी के आत.      | ८४ |
| तीन स्याति की तुरथ करी,     |    |
| पापक बूजे तिसअड़ी तड़ी.     | ८५ |
| अरता मेअन अडा करे,          |    |
| अरवी सुरन सेव है धरे.       | ८६ |
| करेवा, सुरेवा, डंडेडा करे,  |    |
| अंडवा, अंडवी, अडवा धरे.     | ८७ |
| सकरकंड के भीडे साक,         |    |
| पेडा भे मिथी के पाक.        | ८८ |
| राप्ते डीने धुकास स्याति,   |    |
| सधाने ही डेलिक प्याति.      | ८९ |



|                             |     |
|-----------------------------|-----|
| जिससाइ डीने खु जनाई,        |     |
| जेवत हरि के मन न अघाई.      | ६०  |
| अति अति डी आलु करी,         |     |
| अहुतके अति कचरिषी तरी.      | ६१  |
| जि'वन अहु जिधि जिने न अई,   |     |
| आरं आर असोहा लई.            | ६२  |
| पूरी रेडी लीटी करी,         |     |
| भीसी रेडी धी सों अरी.       | ६३  |
| भाजन पुरी पास धरायो,        |     |
| सुधई लै सिअरन सों जायो.     | ६४  |
| सेव अहुत पुरा सों करी,      |     |
| सो तो अव निकट लै धरी.       | ६५  |
| अइ भइ के अति रस बीने,       |     |
| तिनहुइ अति सुंदर डीने.      | ६६  |
| मैया ! भोकें सिअरन आवे,     |     |
| बेला अरि अरि रोडिनी आवे.    | ६७  |
| सुरभी धृत सों बेला अयो,     |     |
| सो लै आत सिअर पर धयो.       | ६८  |
| अौयो हूथ - हडी के बेला,     |     |
| भीडे आम अरु सुंदर डेला.     | ६९  |
| आमन के सीरा खु डीने,        |     |
| सो तो हरि लू रुचि सों डीने. | १०० |
| अरपुल अरु आवो भेवा.         |     |

- हाड जिधि कसुभति डीनी सेवा. १०१  
 छोकरो मडा परम सुभ हाथक,  
 सो तो केवल हरि तुं के साथक. १०२  
 हाड जिधि सासन मोहन डीनि,  
 भात कसुभति डों सुभ डीनि. १०३  
 हरि कसुभन हाडे सासन में,  
 अति सुगंध पीरा आनन में. १०४  
 श्री कर में पीरा जहु लीनि,  
 सो तो आदि सुभन डों डीनि. १०५  
 हाड जिधि कुंड डी भासा,  
 लै आर्य पकरै नंद सासा. १०६  
 कर सुरवी अरु भेंट गदाई,  
 प्रथम अनिता होये सुभ पाई. १०७  
 नीराजन जहु जिधि सों डीनि,  
 सोसा निरभि वारनो लीनि. १०८  
 लैलों हरि मोहन करी आवें,  
 लौलों सहसरी कुंज भजावें. १०९  
 जोडी भरि भरि पदुप लै आवें,  
 परम प्रीति सों सेवा भिजावें. ११०  
 सुख के भंडस, जंसा, यौगारै,  
 सुख के कससा अति जारै. १११  
 सुख की सेवा लै रवी,  
 नहिना ओंठवा सुख अरी. ११२

|           |           |               |        |         |       |
|-----------|-----------|---------------|--------|---------|-------|
| सेवा      | जगद       | दूखन          | के     | करे,    |       |
| रंग - रंग |           | दूखन          | सों    | करे.    | ११३   |
| दूखन      | की        | बोडी          | लै     | करी,    |       |
| ता        | पर        | करवा          | कुंवा  | धरी.    | ११४   |
| अंग राम   |           | के            | जेसा   | करे.    |       |
| अति सुगंध | बीड़ा     | तला           |        | धरे.    | ११५   |
| पहुप भास  | अति सुंदर |               |        | करी,    |       |
| सो तो     | प्यारी    | कर            | पर     | धरी.    | ११६   |
| दूखन      | के        | पंथा          | लै     | जावे,   |       |
| सो तो     | कमल नैन   | कों           |        | जावे.   | ११७   |
| अकल       | पदारथ     | जागे          |        | धरे,    |       |
| जिजिध     | मनोरथ     | मन            | मे     | करे.    | ११८   |
| पौढ़े     | पिय       | प्यारी        | के     | संग,    |       |
| जिजिध     | बोति      | जखत           | रस     | रंग.    | ११९   |
| जहुत      | बोति      | पिय           | के     | संग     | जेवी, |
| रस        | भयांडा    | सथ            | लै     | जेवी.   | १२०   |
| समकन      | सुखम      | अंग           | पर     | जाई,    |       |
| रस        | कर        | पौढ़े         | कुंवर  | कन्दाई. | १२१   |
| जखरमे     |           | के            | सक्यरी | हेजे,   |       |
| अपुनो     | जनम       | सुख           | करि    | लेजे.   | १२२   |
| 卐         | प.        | उत्थापन - जोग |        | 卐       |       |
| वांटा     | नाद       | जयो           | बहु    | जेवर,   |       |
| संजनाद    | की        | मुनि          | सथ     | गौर.    | १०७   |

- धुनि सुनि गोवर्धन धर लगे,  
 मानहुं प्रेम-सिंधु में पागे. १२४
- हाकरी जीव गोवा करु पना.  
 देखा काम परपूल घना. १२५
- कंदमूल है बावन करे,  
 सो तो कुंज सहन में धरे. १२६
- गोप अधाने, सुरभी देभी,  
 फिर कछु मन में मनसा लेभी. १२७
- जेतु-जैत लै बसे कन्दार,  
 दोज सहसरी अति सखु पार. १२८
- आगे गोधन, पाछे व्याध,  
 मध्य गिराजत गिरिधर लाध. १२९
- गो-रज मंदित सुख पर डेस,  
 सोहित है अति सुंदर जेस. १३०
- मनि भासा सुंज देव गरे,  
 गोरी राग जेतु में करे. १३१
- अज अनिता आर्य बहू डेह,  
 देवत श्रीसुख बायो प्रभेद. १३२
- गोविंद गोपिन डें सुख दीनि,  
 कछु क मनोरथ मन में दीनि. १३३
- करे सत्कर बसे आगे ते,  
 करे सकेत रहे पाछे ते. १३४
- अति गिरदिन के अज ही जावा.

- घेरी लिये तप्य महन सुपासा. १३५  
 ॥ ६. संध्या भोग ॥  
 संध्या भोग है बड़ा नाम,  
 सो तो लीला वादी काम. १३६  
 नहं जवन में छोड़े जाय,  
 प्रभुहित सर्व कसोभति भाय. १३७  
 ॥ ७. संध्या आरती ॥  
 अति दिन सो आरती उतारी,  
 कर में लिये कनक की धारी. १३८  
 जीतर जवन पधारै बाल,  
 माय लुरी सप्य जण की बाल. १३९  
 डोळि छोड़े सिंभार कराने,  
 डोळि तेल कुबैल लै आने. १४०  
 डोळि महान मज्जन करे,  
 जिअधि मनोरथ मन में धरे. १४१  
 डोळि बल लै स्नान कराने,  
 अंग वस्त्र करि अति ससु धाने. १४२  
 डोळि तनिया अंग पहिराने,  
 अहु जिधि कूपन-असन धराने. १४३  
 सोलि कंधे, जेनु कर लये,  
 हरि नू तप्यदि फिरक में लये. १४४  
 सड्य सिंगार किये अति सोभित,  
 निरपत तन-मन अतिसे सोभित. १४५

धौरी, धूमरे, गांग सुखार्थ,  
 हारन, पिबरी हीरी आर्थ. १४६  
 यक्ष तो जख-जनितन साकेत,  
 वे सखद्विन डों भोजे' लेत. १४७  
 जिधिष जोति हरि होइन करे,  
 सख भाजन लै रस सों करे. १४८  
 ५ ट. शयन आरती ५  
 व्यास भोग लीनो रस हीत.  
 जख-जनिता ही लानी प्रीत. १४९  
 सखद्विन डों डीधो मन जाये.  
 जह हारन यक्ष जख भे' जाये. १५०  
 जसुभति भोजन डीनो साख,  
 भेगी आधुनो भोजन ! आख. १५१  
 जसुना जल सों जरी करी,  
 लै उदय हरि पास जु धरी. १५२  
 होउ लैवा भोजन डों आवे,  
 जसुभति इनक धार करि लावे. १५३  
 हार-जात भिरखन डों साक,  
 जित सों रसिनी डीनो पाक. १५४  
 इध-भात व्यति भेडों जाये,  
 कभस करि करि जसुभति लावे. १५५  
 यक्ष जिधि लावन भोजन डीनो,  
 ५५५

- हरि कथाउ उठे मन - मोहन,  
 सामि रही वसुमति अति मोहन. १५७
- औखो दूध कपूर मिसाई,  
 जेसा मरिठे रोहिनी साई. १५८
- एकदा जोगन हरि सुख पाये,  
 तज रानी नैयजन करवाये. १५९
- अति सुखी गीरी सुख धरी,  
 पट्टुप भाव मीकठ सु खरी. १६०
- हरि आरती, श्रीसुख जगुं देवाये,  
 आपुनो जन्म सुखी हरि देवाये. १६१
- दुन दुन करत असुरिया जेठे,  
 भात जसोभाति सज सुख लठे. १६२
- सुख सख्या योद्धे हरि राय,  
 थापत वरन जसोदा भाय. १६३
- साति साति ही कहुनी कहे,  
 हरि हुंजरी फिर फिर लठे. १६४
- जिसि लीला कहे कैसे कहे ?  
 सो तो जगजन मन में लठे. १६५
- नेह जगन ही लीला : कहे,  
 मानुष देह हरि सज सुख लठे. १६६
- श्री गिरिवरधर ही लीला गावे,  
 'रसिक' वरन कभल रज पावे. १६७

श्री हरिशयणनां बहुल श्री सुंदर बहुल इत  
 卐 बिं त न तुं धि य 卐 राग - डेहारो 卐

नंद नंदन सुणी ! सुंदर अदायो, बिं त न तेतुं हरिये लः  
 त्रिविध ताप वामे संसारी, सोह-साज नव परिचे बिं . १  
 योवर्धन पुंदावन यमुना, पुसिन कुसुम दुम कुल्यां लः  
 सुंदर कुंज अद्भुत वनवेष्टी, इत्य-आरे सद्गु अल्यां बिं . २  
 होयसदी कुडू कुडू रस जाती, हंस भार सद्गु रोण्यां लः  
 कुसुम कुसुम प्रति मधुकर गुंजे, मान मयुर स्वर योवर्धनां ३  
 कण-तरंगि श्री यमुना मातां, कुल्यां कुमण अर्नतां लः  
 शीतल पवन सौरज सुभकारी, त्रिविध वायु वदतां बिं . ४  
 बहु दिश अंग कडंज गु राभा, अद्भु विध वेष्टी लांभी लः  
 नृप पंत कुसुम पर वारी, लटकी सही अद्भु अंभी बिं . ५  
 हेतडी वंपेड गुहाय भावची, वेष्टी सडल वन जाई लः  
 मज्जि-मज्जिड मय सुनि विराजे, अद्भुत कुंज अर्नतां बिं .  
 लड्या जाती सेज दुष्टीया, कुल लया त्यां सोहो लः  
 कुल तिपारी सोह अंदरवा, मधुध जंघ रस मेहो बिं . ७  
 इय अतुंभम लजनी नारी, सोणे गुंजार सारी लः  
 नाना डेलि हरे रस - जाती, सजे जाई जिहारी बिं . ८  
 अद्भुविध नारी रंग रंग सारी, अंग वीजणी यमके लः  
 वड्या-वेष्टी सुधक जाती, लडके लंडर लमडे बिं . ९  
 कुंज तिपारी नवल जिहारी, राधा मोहन सोये लः  
 छविता ल त्यां पान अवाडे, निरधि निरधि मन मेहो १०



एक भूटा एक चोंड्या दोणे, एक तो कुसुम जनावे ल;   
 एक कुसुम लई द्वार जनावे, अपने हस्त परेनावे. चिं. १   
 एकां एक सुंदरी बरक तलासे, जेणा भांडे वीधा ल;   
 नाम भजिने अजवाजे हीठां, सोजे विद्ध असिद्ध. चिं. १   
 प्रथम अक्षिण बरक विवारी, पंच अं कुश निहाणे ल;   
 अक्षुविजत कभण रस जयां हीसे, पण दुःख सवे' सणे. १   
 सावीठा भंगल सुमहारी, अशुकोक जै विष' दाता ल;   
 जव डीवि रेणा कलश जयां रस, निरणि निरणि सौ जाता.   
 एवार पाडी सभी वाम बरकनां, विद्ध निरजय जागी ल;   
 प्रथम जोपद अंशु डेजीने, अशु तळी सेद्ध जागी. चिं. १५   
 वीकुं वसुध जगत जय हारी, पाजलधी निकोळ ल;   
 अर्थबंद शीतल सुज हारी, जोड्ड रई ज्योम. चिं. १६   
 नर-सत विद्ध बरक तले शोळा, रस बरक रस जारी ल;   
 हरा नभय'द भजिनी शोळा, डोदि थ'द पुति हारी. चिं. १७   
 नाम भक्ति ज्योत लुदवमां आवे, डोदि तिमिर अथ अपे ल;   
 पुति अक्षरे अतुल्य पाछे', अजसाभत हारि आवे. चिं. १८   
 उपर आवे कुं कुम शोळा, तुजसी सौरज भाळी ल;   
 जिविधी वल माळा सुंदर, बरक कभण परसाळी. चिं. १९   
 शिव कलक भक्ति भक्ति हारी, रान जडित जमि सजे ल;   
 केम केम प्रसुल बरक यतावे, नूपुर किंकिणी जाले. २०   
 ज'बा सुद्धुन डेरु हे शोळा, कवली ज'ज समाने ल;   
 पूड जाव ते जारी हीसे, निदंज अति रस दाने. चिं. २१

अति तट पीतांबरनी शोभा, दिव्य कनक कर्मि राजे छः  
 अथवा थाये वासु पशवी, वामक दामिनी साके. विं. २२  
 इत्यापनी रसिक मन भाडे, इव अतुपम दीसे छः  
 अति तट ऊपर शोभा नववी, अक्षय सकल विशेषि. विं. २३  
 वायु कर्मि रथां नुन कन आके, शोभा ते शी कठेवाव छः  
 वृ वरुणमि कामकुमारी, निरुपी अकित मन थाये. विं. २४  
 न्यासि अंकीर ने अति पातलडी, सिंध आभटा साके छः  
 अंज अंज इवाव सुकण्या सीमा, अंजन सिंधविसाके.  
 न्यासि कुदय रोभावरवी राजे, नाना अलि गळु पंक्ति छः  
 पीन विराटल उर-रथण शोभा, कृष कं कृमनी संभति. २५  
 न ऊपर वैजयंती भासा, कं कृवी अति लगी आर्ष छः  
 दिव्य कनक नव रान अरित, सुकस सकल वग आर्ष. २७  
 अरे गळु मोतीनी भासा, अंज ते दुजदुगी पार्श छः  
 म्यातानी निर्मित मज्जि भासा, शुंण्य भासा मोर्ष. विं. २८  
 उपर श्री वरुण लोचन सोडे, ते ते लक्ष्मी पाव छः  
 म्याना सूत्रे मज्जि परेअथा, कीस्तुल तेतुं नाम. विं. २९  
 अडे पडेरी उर पर सोडे, राते वंभे चान छः  
 अंभति अतुपम अक्षर रसावी, रवि शंके अति सभाने. ३०  
 विरवी अंठ कनकनी दुजरी, शोभा रसिक विसाके छः  
 कंठ कृष्णमनी भासा पडेरे, रागत अस्त सभाके. विं. ३१  
 अंके आस्तुअंथ, दिव्य कनकनां, कृमलदां रथां लणके छः  
 करे कं कळु, मोतीना गिरणां, पाळोअंथी हीरा जणके. विं ३२

भीलु इरा नभ्य-नभोत रसुली, हस्ततली ते लाल लः  
 सुरली सुंदर सपत रंज रवर, बाबे परम रसात. विं. ३३  
 आहु आगतु रकंभ अति सुंदर, पीत पिछडी आली लः  
 सुंदर नारी रवाम निहाणे, अय दृग्म लज्जत आली. विं. ३४  
 विष्णुत वज्र लूफळ अति ललके, अथर विंभ रस राता लः  
 इत-पंक्ति ते कुंड-हमी-ही, मंड ह्यास रस-भावा. विं. ३५  
 नासा सुंदर आंभ सुवानी, नकवेसर नंग अणके लः  
 गज भाती ते अद्भुत दीसे, अथर विंभ पर लणके. विं. ३६  
 मंड ते कस्त विराजत मनोहर, अंभ विव लंभाण्यां लः  
 लाम जल क्लिष्टा, अलक मधुप सम, काजल सरस रोभाण्यां.  
 मकर मनोहर कुंडल काने, लपेति ललक रवि बाबे लः  
 सांभ्य योग ते विडे लखे, आक्षिप्त रान विराजे. विं. ३७  
 चार सुकुठ शिर दिव्य कनकना, नंग असासिक ललके लः  
 अथं अंभ आहारे दीसे, भाती आहु ललके. विं. ३८  
 विव कृपाल तिमक अमि राबे, अलकापली अति आरी लः  
 लकुटी लड वज्रप-ही दीसे, कंठर्प-मान निवारी. विं. ३९  
 नभन कभण ते अति रस भीनां, दीधं कभण समान लः  
 अति सुकुंठ अति लोहित लोने, लीडी हरे कनभान. ४०  
 विव लभुद्र कृष रस भीनी, रस अल अंभल ताई लः  
 सुंदर सुरली सुधा रस पूरे, मधुरी मधुरी अलार्ड. विं. ४१  
 लेवी सुंदरी सजे राधा, इप आहुरी सोळे लः  
 सुंदर दासी अलक ललासे, निरभी निरभी मन भाळे. विं. ४२

अंग अंग तुलसीनी भासा, लीला कभज हिरावे लः  
 अंग अंग रसभी भासा अलि अङ्ग, सुजल अंग लपटावे. ४४  
 अंग अंग ते लोहित परसे, अंग ते कनक सभाने लः  
 अंग-अङ्ग विद्वान् जिहाने रस-सुं, अंगारे पाली नंग वाने. ४५  
 अङ्ग अङ्ग वीरिया नू पुर सोढे, अङ्गणी केरे साडी लः  
 नीलाङ्गरे तन, सता अङ्गिया, रथाम अङ्गुली गाडी. चिं. ४६  
 अङ्ग अङ्ग के कही केवी, पुष्ट निताङ्ग अङ्गी जारी लः  
 अलि अङ्गीर ने कटि केहरीनी, किङ्किणीनी अङ्गि-नारी. ४७  
 अङ्ग अङ्ग दुगदुगी सोडी, रत्न अङ्गित अङ्गु हार लः  
 अङ्ग अङ्ग पयोधर जारी, दुखरी तेज अङ्गार. चिं. ४८  
 अङ्गी गांठी जिनमनी सोळा, अङ्ग अङ्गुली भासा लः  
 अङ्ग अङ्ग अलि सुंदर लीया, अङ्गमद पत्र रसासा. चिं. ४९  
 अङ्गुअङ्ग रत्न अङ्गकारी, अङ्गी अङ्गु सोढे लः  
 अङ्गुअङ्गी वींठी ने हाथ सांठ्यां, अङ्गुली मन सोढे. चिं. ५०  
 अङ्गुअङ्ग परसे अङ्ग अङ्ग रसास, अंत ते अङ्गिअ अङ्गी लः  
 अङ्गुअङ्गु भाती अङ्गके, अङ्ग हास ते वीज. चिं. ५१  
 अङ्गुअङ्ग ते अने सोढे, अङ्गित अङ्ग अङ्गि लः  
 अङ्गुअङ्ग नयन-अङ्गणे रंजीली, भासा अङ्ग अङ्ग. चिं. ५२  
 अङ्गमद अङ्ग अङ्गारे अङ्गके, अङ्गुली अङ्ग सभान लः  
 अङ्गुअङ्ग नयन अङ्गु अङ्ग अङ्गके, अङ्गुली तेज अङ्गान. चिं. ५३  
 अङ्गि अङ्ग सोढा अङ्गुली, भासे अङ्गुअ अङ्गुअ लः  
 अङ्गु अङ्ग अङ्गिनी रत्न अङ्गित, अङ्गुली अङ्गुअ अङ्गुअ. चिं. ५४

कंकु हाथे मोहनलु मेठी, वारु वरकुन खासे लः  
 सुंदर देवाम अपर रस मोठी, रस परा खांडत निहाये. ५५  
 हासी सुंदरी वरकुे लाठी, अिसुभ निरभु' ने गाठे लः  
 पारं पार जिई जिई ने रीडुं, बाणी बाणी वारकुे जाडे. ५६  
 कुंज अचनी डोभज झुमि, छाया सरस रसाण लः  
 कण तरये वसुना लहरी, राधा मोहन लास. विं. ५७  
 डीडा रस परा देवाम पंधाणे, संगे सर्वां अण नारी लः  
 नाथे गाथे आप देभाडे, निकसे लाल निहारी. विं. ५८  
 हाथे नयावे, वरकुे वजावे, कडिनी मोहन भीडी लः  
 नयन वजावे, ताल भिजावे, अडसुत यति मे' वीडी. ५९  
 राधा नाथे, मोहन नाथे, नाथे सवणी नारी लः  
 जिई जिई' मोथे, ताल अणवे, डीडा रस परा लारी. ६०  
 कंकु पाळे किंकिळी पाळे, नूपुर सहस्र कभाळे लः  
 ताल मुडंग विविध रस पाळे, संगीते सुर साजे. ६१  
 झकु अेक व्यासिंगन लई आळे, झकु अेक पदन निहाये लः  
 झकु अेक अपर मुखा रस पावे, झकु अेक अंतर दाये. ६२  
 अेकना बाणी अळिपा ताळे, अेकने आंज भियावे लः  
 तत छिन फभकखडे करी नासे, तत झकु आणी बनावे. ६३  
 अेक सणीने पाळे अडीने. कूडी अमर कभावे लः  
 पीन पंधापर डेर-सुं वीडी, तन्या तापे सभावे. विं. ६४  
 कूल्यां कूल्यां कभज उंडाये, कंकुत मार वजावे लः  
 पीतांबर लई नाथे भूडे, नाना नाथे नयावे. विं. ६५

कळु अंक कुंज सुनि धर्ष येसे, साथ सकलने पिळवे लः  
 पाळगधी उर अंतर सीडी, सुंजन करी रिखावे. सिं. ११  
 कळु अंक लंज कडंज बडीने, साथ दाग लुखावे लः  
 कळु अंक भीलु दाग बडीने, वनवर सकल पिळवे. १३  
 कळु अंक धर्ष पाळगधी आवे, कळु अंक आंभ पिळावे लः  
 कळु अंक नथ सकलाभां आवी, श्री हस्त कंठ पसवे. १८  
 संपत सुनन सुनि सुरवी वगाडे, अथर-सुधा रस पावे लः  
 मधुर राग केदारो आखावे, निज जन सगं वरा थावे. १९  
 तान अंधान विविज रस कोंथे, सुंजन तरंग यखावे लः  
 बाधा निजजन प्रीतम उपर, रसना मोष हखावे. सिं. २०  
 साधां पंथी मोन धर्ष येडां, तनु मधु धारा वरवे लः  
 उर पापाळ, वग लिखर थावे, सुंम मळु अंक ठक निरवे. २१  
 मस रयेव रस केळि मनोहर, तान मान अंधान लः  
 चंदव तान उपर लर्ष नावे, मिय पिळ मधुरे मान. २२  
 नव नव राग रंग रस वरवे, मधुर किं किणी आवे लः  
 नता धर्ष धर्ष येडां नावे, रस संजीते सावे. सिं. २३  
 कुंज कोळि नयनना आगा, अंध कंधुडी लुडे लः  
 पिपिलिज हार वीर भक्ति भासा, कुंजुम हार कळ हरे. २४  
 अहंजिंजन सुंजन रस कोटा, रस पितासे थावे लः  
 कुंज हरे श्री हस्ते सीडीने, अथर सुधा रस पावे सिं. २५  
 कुंज निकुंजे सेज समारी, कुंजुम प्रवाज सुधारे लः  
 स्वच्छ सुंदर सुंजिन करीने, साथ संग पधारे. सिं. २६

रति रस धन करक मनमोहन, कुसुम सेज पर राजे हउ  
 भट नउत सुभद सभौषि सेवे, पवन त्रिविध सुभ व्याधि, विठ  
 छोटि ज्येध वसन जहु ठाणे, रति रस व्यातुर धापे हउ;  
 भादालिभन ज्येध ज्येध लीडीने, अचर सुधा रस पावे. वि. ७  
 तरलित ज्येध रंग रस वराधी, नूपुर डिंडिणी ज्येधे हउ;  
 विरेज घात, नभ घात रान कर, रति रस डोसि विरज्ये. वि. ७  
 विपरीत कांत विविध रस डोडा, कुंज रंज सभौषि धेधे हउ;  
 निरभी निरभी सुभ व्याति रस पावे, लभ सदन करी डोणे  
 पद रज बडे सुंदर दासी, अरक दुग्धभां धारे हउ;  
 कुच कठोर-सुं लीटि नारी, कुच-ताप निधारे. वि. ८  
 मंजन अरक करे निज दासी, सुंदर पान भवारे हउ;  
 अरस परस पावे भवरावे, कविंत सभौ-सुभ धारे. वि. ८  
 अरस परस सुंभारे करावे, सुभक वसन सुंभारे हउ;  
 रति अम ज्येध सुंभारे वहावे, वसुना जण पावे धारे. वि. ८  
 नवल डिठारे नवल मज नारी, लज डोडा रस रीजे हउ;  
 भांडो भांडे प्रेम मजन-सुं, छोटि रंग रस कविने. वि. ८  
 किरु कविने ज्येध सेन ज्येधे, ज्येध ते प्रेम निहावे हउ;  
 छूटे ज्येध वहुटे साडी, लीला अंशु उछाणे. वि. ८  
 छूटे डेस वसन जण धारा, धाई धाई ज्येध जपटावे हउ;  
 रस वरा ज्येध ज्येध लीडी, अचर सुधा रस पावे. वि. ८  
 छूटे वार मीर ज्येध छूटे, बाडी ज्येध निधारे हउ;  
 ज्येध ज्येध अमित रस कविने, श्यामा श्याम निधारे. वि. ८

- कुली निकुंज सुभीषि पथार्था, इरी सुंभार इराये ए;   
 पवन आल्लाषु कुंजुम डरसुं, माषि कुसुम कराये. शिं. ८८   
 स्थमा ह्याम सुंभार इरीजे, चंडन चित्र मनाभ्यां ए;   
 जंबूल दूर विविध रस माझी सुवती धूय सुंभ छाभ्यां. ८९   
 ज्येक तो नवन माधुरी निरजे, ज्येक तो वदन निदगणे ए;   
 ज्येक तो अंधर सुधा रस खाजे, याणी डर छवि सीसे शिं. ९०   
 नर पुरुषी ज्येभन महभाती, चंचल नवन जिरासे ए;   
 कस्तुभ वल्लभीसुं प्रेम कक्षुये. इंड गांडलही घासे. शिं. ९१   
 मंड भरलव्यालवले मोहन, मजगति व्हासे गोपी ए;   
 इतिही धूय महामरा द्रापी, नंदकुवर संध गोपी. शिं. ९२   
 ललित जिहंगी नव नवरंगी, रुसिक शिरोप्रज्जि राधा ए;   
 सुंभ निकुंज सुभीषि पथार्था, पादुको रंभ कगाधा. शिं. ९३   
 सुषी ज्येक छक छक आवी, महु विष भेषा लावी ए;   
 नना विष पडवानं मिठव, सोहरिने मन लावी. शिं. ९४   
 ज्येक ज्येकने ज्ञाय जमराये, हीरा उदित कलंगे. शिं. ९५   
 हीरा ललित मन माळ विधाये, अंतर कस्तुभ प्ररिषे ए;   
 प्रहस्य जीवतलस वरसु रेडुनी, आर्या मनभां भुरिषे. शिं. ९६   
 ह्यम हेम्य मेहु मह मसर, केव लालसा लजिषे ए;   
 अथापि साया जिननिवारी, सो वल्लभ पड जजिषे. शिं. ९७   
 ज्येक रमलसु इयक वारता, वैष्णव कलसुं प्रीते ए;   
 शिव येपरी वैष्णवसुं वदावी, प्रेम रंगनी रीते. शिं. ९८



स्तुति निंदा ये त्याग करीने, अस्त सौं निवारो लु;  
 कर्म शोक दुःखे भवमांसी, अस्तु कर्म विं धा नो. विं. ६।  
 विषय वासना भूष न करिषे, सौं अनेतो टोयो लु;  
 वाग द्वेष भवमां नव भरिषे, श्री करि नित्य निहाये. विं. १।  
 सुकुंठकुंठ वचन नहि विषे, सुभं दुःख सम करी सये लु;  
 कपट करीस सुभरता वाणी, मान अथमान सह सये. १।  
 श्री परब्रह्म पद कर्म विचारो, आशा संभ न टोयो लु।  
 भावम रीते कर्षर रीने, वचन अस्तुलनां पये. विं. १।  
 सत्य वचन सुभ भापुरी वाणी, प्रेम निरंतर सये लु;  
 शीतल आवे स तेपि रडेवुं, अस्तु वचन नव जाये. विं. १।  
 विवेक विचारो दीनता सये, भीष्म धरि दुःख सडेवुं लु;  
 व्याघ्र सवे हृष्य विचारो, साक्षीपद स रडेवुं. विं. १।  
 पुष्टि आरे सेवा करिषे, सत्यन जावसुं शीने लु;  
 वैष्णव कर्मसुं शीत सखेरी, हृष्य कथा वस भीने. विं. १।  
 नम शिभ इप विचारो जाये, अस्तु विं तन करीषे लु;  
 विनत राम संसार गुलावे, वीर्यामां विं धा नो. विं. १।  
 अष्टोत्तर शत पद ते भक्ति, निरुद्धि सुभशी हेरा लु;  
 सधा मेहन गोपी सये, शीत अस्तु विं तन हेरा. विं. १।  
 'दासी सुंदरी' जाय अतिहारी, प्रेम करण सुभ जाये लु;  
 श्री परब्रह्म पद कर्म हृषयी, अस्तु पुष्टि धाये. विं. १।

श्री करि सपलनां वहु लु श्री सुं वर वहु लु वृ